

हुने.
३६

मधुरवचनकहतभए॥यद्यपि
राधाजीविरहकरिअत्यंतरखीन
हे॥तोहनम्रहोइकरहईषायुक्त
॥खंडितानकेरससोतुमभीतर
भरेहोतहीरसबाहिरहवर्ततेहे
निश्चय॥तारसकेविरुद्धवचन
मूढबोलिबोलितुमकोंउचितना
ही॥तुमतोबहुतसाधूभलेहो॥जा
तेंआपगुणआरक्तअनुरागतदी
यत्वकोलोचनविषेंचुंबनकर
त॥ताकीनम्रतास्यांमकजलकुं

आपुने अधर पर धरत हे ॥ हे व
जाधीश ॥ २ ॥ और तुम्हारे अध
र विषे दंत क्षत पंक्ति नास्त्री यो क
रि सो दवी तो सर्वत्र कहि देत हे ॥ ३ ॥
अब ही तुम्हारे भीतर निभरि अ
धिक्य ॥ तिन स्त्रीयों के ध्यान ते वा
हिर हू प्रगट भए हे ॥ नास्त्रीयों के
कुच के कुंकुम को बिंब में बाहिर
हू देखत हूं ॥ तुम तो नाइकाई भए
॥ और ते नाइका तुम ही होइ रह हो
॥ नाकी आवसावधानी में नीला

न.

७

बरपीतांबरकी ठोर पहनी आए
हो॥ सो कहै देत हें॥ तुम ही हो ऊ एक
भए॥ तब मेरी अपेक्षा काहे कोहे
ता ते तुम नाही स्त्री न के अनुराग
ज्यों चार प्रहर रात्रि को तुम को वि
लास करत करत तुम को जगाए॥
सो अनुराग तुम्हारे नेत्र कमल में
दिखाई देत हो॥ ता को तुम छिपायो
चाहत हो॥ ए मेरे आगे कहा छिपे
हे माधव में मान हं जो तुम्हारे नेत्र
के तारे के बीच पुतरी हो॥ सो पूतरी

नहोइ॥ तोकों नहे॥ जाने च्यानरात्रि
कों रिमाएहें॥ यातें तुम्हारे मल कमि
लन करतहे॥ सो वाकुं छिपाइ वेकूं
करतहो॥ तुमकों मेरो डर कहा॥ तु
म तो महा सुरहो॥ तुम सब संग्राम
की जय के कर्ताहो॥ नाइ कानकूं
जीति क्षतादिक करि छोडेहो॥ सो
उप्रमुदा लोकातीतहे॥ जिनें लि
ख्यो हे तुम्हारे उर स्थल विषे जय
पत्र॥ ई॥ यह नाइ का के नख क्षत
नहोइ॥ तो कहाहे॥ अग्र वियोग की

हु.न.
३८

आसंकाकरि तुह्यारे हरयमें प्रे
सहोइ वेको दार रचो हे ॥ ७ ॥ तेनाइ
का तुम विषे अत्यंत नम्र होइ ॥ ओ
तुम महां वीर हो ॥ ओर तुह्यारे चर
ण विषे बाको कुच कुं कुम आधो
लये हो ॥ ताने पूर्ण पुरुषोत्तम को
पनी यहै हम को मति देखा ॥ ओ न
हे जे रा ॥ तुम अपने हरदय में अ
नुरूप अंतर बह न चैन हो ॥ सो ता
को प्रसन्न करो ॥ हमने तुमारे म
नो रथ पूर्ण भयो ॥ ताने हे कमल

दीर्घदलने न ॥ वाही नाइ कामनो
रथ कुं पूर्ण करेगी ॥ ८ ॥ तुम मो सो
अवधी की नीहनी ॥ जो या रात्रि को
आवे ही गो ॥ सो रात्रि अजहं भई
नहीं ॥ आश्चर्य करि कह न हो ॥ जे कि
सो र अत्यंत तुम साधु भए हो ॥ ए
ताइस में विरह करि दुखित कहूं
तुह्यारी यह साक्षान्त ताकी कृपा
कृत जो अवधिने अगाऊ आए
गो हे प्राण नाथ सर एहं तुम कुं
कहा कहूं ॥ अथवा नाहीं जानत हूं

जो आगें भावहं कहा कहं ॥ अथवा
नाहीं जानत हं जो आगे भावहं कहा
हो नहा रहे ॥ विधाना ने मेरे अइ
ष्टमें कहा विचारो ॥ सो मो मे नहिं
जानत ॥ बाकुर के सेहों ॥ कछु थोडे
कपीत नयन ॥ ओर ज भाई खात
ओर प्रिया जूके बहुत भय करि ॥
रति रमण के चिह्न करि ॥ रमणा
दिक करि ॥ कजल देखा ॥ पान पी
काइ नो निलका जावै रेखा ॥ बिन
गुण माल ॥ पीठ कंकण ॥ पेच सि

थल ॥ इत्यादिक सर्व चिह्न ॥ सब
गायन करि वेको ॥ अत्यंत उदार है
॥ एताइ स बाकुर मुह्या दी मानसी
पीडा कूं समयो हो ॥ हे सरो जाक्षी
॥ ११ ॥ इति श्री पंचमोहना सप्त
ध्यां ॥ ५ ॥ ॥ नदनंतर विरह दुः
खित जे प्रिया जी ॥ ने अत्यंत व्याकु
ल देखि करि ॥ बाकुर प्रिया जी को
देखि के एसे चुप होइ के रहै ॥ पि
र के सी हो प्रिया जू ॥ कंदर्प के वाण
करि खिन्न जरजरि न हो ॥ बाकुर

गोकरं परं रूप ॥ सौंदर्यं मधुरं परं
 अर्थजो रस्य के लीला ता मुक्त
 आपुन हृदय में ठाकुर ध्यान करत
 है ॥ सा धाजू प्रति ॥ चतुर चूड़ामणि
 सखी कहत भई ॥ हे सखी राधे ॥ प
 हं भरो कह्यो वचन सुनो ॥ एठा
 कुरनु मप्रति अनुकूल है ॥ एतादृश
 विषे न मान मति करि ॥ उहां प्राण मे
 ऊ प्रेष्ट है ॥ परि तुम विषे अत्यंत अनु
 राग हो ॥ उन की मीतिके तुम वसी हो
 ॥ ताते हे मुग्धा ॥ सुंदर लोचनी ॥ हे

गोकुल वंद ॥ एतादृश उन्मत्त मीत
 मसों मान करि वो उचित है ॥ नही
 कीजे ॥ हे सरो जाक्षी ॥ हे दीर्घ ने
 नी ॥ २ ॥ हे राधे मद सुगंध सीत
 ल वायु वहत है ॥ ना विषे यह माधव
 लक्ष्मी पति है ॥ परम पुरुष है ॥ ना क
 रि पर की या रस त्वही स्तुति की नो
 ॥ सो लक्ष्मी हूं को छाड़ि के ॥ अभि सार
 की ऊंच पदवी को पाइ के ॥ जब एतु
 ह्यारे वन विषे आए ॥ तब जिलो की
 में कहयातें ऊपर ओर सुख है ना

हं॥ नेनोत्तं जानतहे॥ मेंनोसं कल
कहं नथा॥ पितु मारी॥ सुभधा यथा
हं॥ नाने कह निहं॥ ३॥ हे श्रीग धेनु
री सो भाना सीवा की महि माकुं वेद
ह नही जानत॥ नो ओर को न जाने
॥ परि जा माधव कंचंद ओर जैलो
कस्वी की अद्या पलो॥ अत्यंत आतु
रता सोखो जन फिर नहं पावत ना
ही जो॥ सो ठाकु म विषे गोत्तं अत्यंत
प्रीति करि॥ नेरो आसक्त होइ नो सो
अभिमार करि खोजन खोजन

नेरे वन में आइ प्रणपति करत है
॥ ४॥ हे मुग्धे एताइ स विरह कुं पा
वत है॥ बंगही मद स्सदन मिलि॥ ओ
र आपुने विरह ताप कुं धो डि॥ अ
ब ओर ही॥ आपुने जुगलो च न क
रि॥ ठाकुर को दर्शन करि सुफल
करि नैन को॥ ५॥ हे मुग्धे॥ हे मु
रारी प्रिये॥ में पहिले बहुत बार
नो संक लो॥ तं कह हं माधव सो
गाढ मान मति को॥ पद्य पितो सो
महा अपराध की नो होइ॥ नो हं अ

वनमहोद। नामें अपराध त्याग कर
नो। सो बहूत आवस्य कहें। नामें क्ष
मा करि। निरान मो वा विनु तो रखे
न परे यो। विन दे रे पाए ह प्रीडा
होइगी। नामें अब अवसर है। आ
यो माधो सो मिलि। ॥६॥ हे सखी कु
च कुं कुम के बिच कुं। तं लोचन के
नीर के प्रवाह करि मति सी। चेरु
न मति करे। काहे नें जो जानें या हूं
को मन होइ। अग्नि न होइ। तो कह
तें रहरय मे नो प्राण प्रिया को॥ स

घन अनुगवाहिर प्रगट भयो है
सो समायो नही। सो बाहिर उत्पटि
च ल्यो है। सो लाल अग्नि नाही। जो
लोचन के नीर करि बुझावन हो॥ ७॥
॥ अब टाकुर के सेहें॥ जो अखंन को
मल चिह्न है। ओर तुझा दोनेक मां
न सहिब कुं अशक्य है। तो त्याग तो
कहां ने सहि सके। आधी यही। नामें
कहा अवस्था होइ। नामें नुम कखो
जो ठाकुर इहां आवे। आजादी नी
ओर नुम उदार हो। नामें मधुस

धुरजोबोलो ज्योवे आवें॥ नुमपर
उदरहो॥ उनकी ओर नुमायी प्र
नहरहो॥ ८॥ यह इनने कालबीच
प्रीत को पके भरकरि प्रसिद्ध मान
वनी जो श्री प्रियाजू॥ सो ऊंचे नि
स्वा स छोड़त॥ ओर को पकरि अ
पुने अधर को डस दे नहें॥ नवरा
नदयेने॥ काल विनं वने मानव
मिथल भयो॥ नवठा कुरने अव
सर पायो॥ नव श्री प्रियाजू विषे
ठाकुर के अनुराग के भरकरि

रस करि आइ हृदय युक्त॥ नाथ
चटकार प्रणपति बीच बीननी
केवचन॥ श्री प्रियाजू को परम
आनंद चंद नवदनी प्रणिनाथ
दुवचन कहत भए॥ ९॥ हे सरसि
जनयने मो विषे न मानन जि
॥ ओर नुम को घर उचिन नही
जो मो पैरे दर्प के बाण छोड़त हे
हे सुंदरी॥ नुम मो को भजो॥ कहु
हवि चार मति करो॥ नलनी बी
हुं प हिसो॥ ओर धुं पर गुं गो क

ये॥ हे प्रीतम नमः निरुं ज मे जा
ओर मार्ग को छोड़ि॥ ओर नम
अपने अधरा मृग करि॥ मोरुं प
रिनाफ जो कंदर्प ने र चोहे सो ह
रि करे॥ ओर नम आपम धुरव
चन करि बोलि करि परम सुख
को विस्मयो॥ १०॥ कुच कुंभ मंग
ल कलस के आलिंगन ने आरंभ
की संभावना नही है॥ आलीहूं मो
को अत्यंत सुख उपजावन है॥ मो
आलिंगन ही ये पाछे नो कदा जा

निध के सो सुख उपजे गो॥ नाने
नम आलिंगन को कहा बिलंब कर
न हो॥ ११॥ ठाकुर श्री प्रिया जू प्रति क
हत हो॥ जो मेरे सोऊ ने चक मल को
तुझा रे नूतन पूर्ण मासी को जो मपं
चमा से तुझा रो मुख चंद्र ना को कि
रण निकरि मेरे लोचन क मल ना
करि नास की प्रभा करि॥ तुझा रे वर
न चंद पर प्रीति बिंबि न होइ गो अव
ही कंदर्प के मंगल कलस है॥ जो जु
गल कुच ना विषे नूतन पल्लव की

पंक्ति शोभा मानक निहै आली ॥ ना
कलस विषे ॥ मेरे कर पल्लव राशि
मकर पत्रिका करवाओ ॥ ओभला
ठोर जोर सकी स्थिति है ॥ तहां अह
चंद्र को धरन देहु ॥ नाते रस प्रगट
होइ गो ॥ १३ ॥ हे प्रलय नीच राधे
जो मुम मो पर को पीही हो ॥ तो चो
रासी वधादिक करि मो को बांधि
राखि ॥ खंडन करो ॥ नख क्षमा दि
क करो ॥ मेनु क्षा रो अ पसा धकी
यो है ॥ १४ ॥ हे पि ये ॥ तु क्षा सी भुंहु

टीरु पजे धनुष ॥ ना विषे राखे है
नेत्र कमल ना विषे कंदर्प के जो
बाण ॥ सो हे मुग्ध कह को न को क
रेगी ॥ सो मो पर कटाक्ष करि दे
खो ॥ १५ ॥ सर्व सु करि सर्वात्म प्रभा
व करि मो सो नु म सो सर्व लहे की
नाही ॥ मे रो दुख तुम को व्यापे नु
मा रो मो ह व्यापे ॥ सो न ल करि नि
र्हार करो गो ॥ १६ ॥ मी या जू प्र निष्ठु
र कह न हो ॥ जो तु क्षा रो वचना मु
न रूपी मंजु पट्टि करि ॥ ए मे रो

बहुततापसमायोहो ॥ अन्यकार
नेनसमेगो ॥ नातेविलंबको
जि ॥ विलंबनेविषचट्टिजाये
॥ मोहेसखीपाछेनमिटेगो ॥
अथमीयाजूकोआसंकाभई
रनी ॥ जोतुझारेनेननमेंजो
ओरसुंदरीहो ॥ नाकोऊक्षरमे
नेहृदयदेसविषेदेखो ॥ सर्वत्र
तुमहीआपि रहो ॥ ओरको
ऊसुंदरीमेनेहृदयविषेमेवेसहे
इवेकोसक्यनाहीतुमहीहो ॥

नातेतुममेरीउपास्यदेवनाहो
॥ नातेसबआसंकाछोडक
रिहेमुग्धेसरोजाक्षी ॥ बहुतम
सत्तनाकोमोविषेविस्तारो ॥ ओ
रमोननजो ॥ ओरविमुखवनाह
कोमजोओरसनमुखहो ॥ आ
नंदिनहोइपधारो ॥ विलंबमनि
करो ॥ १८ ॥ मेमसखीवानाकर
नहो ॥ मोसखीआशिर्वाददेनहे
चरनचरनदूरगईजोगाय ॥
नाकोठाकुरआपुनीमीनिकरि

हु.न.

५७

नीलमेघवाणींभीर॥नासंज्ञ
पनीबाहंपीतांवरफिराइहाय
उठाइगायनकोनामलेलेबुल
वतहे॥सोठाकुरभीराधेजुकेप
यउनकोवांछितकरोअभिल
षपूर्णकरो॥२०॥इति श्रीषष्ठमे
हलाससंपूर्ण॥६॥ ॥अब
सातमेहुआसविषे॥पहलीस
खीइसरीप्रति कहतहे॥जोआप
कारभीआजूसोठाकुरनेंवहन
वीननीकरी॥महानंतरवीननी

केवचनसुनिभीआजूक्योह
करिनेकस्मिन्नमुखभई॥ठा
कुरनेंमनाए॥नाकरिमंदहा
ससदृशअप्रियाजूभई॥नव
प्रियाजूप्रतिसखीकहतहे॥१॥
हेराधेजेसीहंवलोकामेंको
सोभाग्यसीमंनिनंबवनीहे
नाही॥यानेंठाकुरआपकार
प्रणयनिकरतनेरेआधीन
होइरहेहें॥ठाकुरमनाइवेकुं
आएहें॥नानेंसोलहसिंगारका

गो॥ या प्रकार हे सुमुखी श्रीगण
जसो कहिक रि॥ आनंद युक्त हो
इक नि॥ बावना चंदन कस्तूरी
गार कपूर चोवा और सुगंध
लाइ॥ अरग जाकरि॥ सखी श्री
मीया जूको उबटनो करत भई
॥ ३ ॥ ना पाछे के सरसो उबटनो
करत भई॥ पहिले सुगंध सो
मीडिके ना पाछे अकेले के स
रसो॥ और मीया जूके अंग वि
धेनो॥ सहज ही अमोह ही या

प्रकर एकी बान भई॥ ४ ॥ हा
ए पीछे सखी चीर पहिरावन
भई॥ महा दिव्य पट कुल॥ और
फुंदी के नावा के फुंदे ना कटि
के विषे ठाकुर को देखि वे को
दिनाइ वे को अंग हेनु ह्मा रे॥
हे मोहना॥ ५ ॥ हे भू न्या लंवा
सक्ष्म हे कटि जाकी॥ ६ ॥ म
शमनी चेतो विहुल ना परनी
ल मेघ ना के ऊपर स्थिर बीजु
री॥ एसी प्रिया जूकी कंचुकी

हु. न.
४२

की सो भाहे ॥ ७ ॥ गोर अंग पर सा
म कंचुकी पहि राय करि चरु
चूडा मणि सरवी ने आगे भा
हो नहारहे ॥ सो सूचन का कीन
॥ ८ ॥ सोवन जूथ का चंवेली अ
र मालनी के पुष्प की सुंदर बें
गुहिक रि ॥ बेणी के प्रांत विषे स
रवी मुक्ता के गुच्छा की चमरी ध
रत भर्दी ॥ ९ ॥ निरखी सुंदर क
स्तुरी की आड करि के सुंदर
मणि मालि क्य जटि न निल

क धरत भर्दी ॥ ता पाछे कुं नल
सुनिता विषे न्यारे न्यारे पुष्प
करत भर्दी ॥ १० ॥ मांग विषे तो
मुक्ता फल की कोति ॥ सो मुक्ता
फल की कोति तो न होइ ॥ तो क
हो ॥ गंगा जी हो ॥ हे सरवी ॥ एसा
म के सरवा सो तो न होइ ॥ तो क
हो ॥ ए श्री यमुना जी हो ॥ हे स
रवी ॥ ए सेइर की रेखा तो न होइ
तो कहो ॥ पाछे ने सर स्वती
आई हो ॥ कंदर्प ने यह विवेणी

रचीहे॥ काहेकों कामं ना के फ
ल देवेकों॥ नीर्थ राज॥ निवेणी
नीहे॥ काहेतें जो नीर्थ राजमें
कर संजोनि को सर्व मुनीश्वर
एकत्र मिलतहे॥ नहां वेणी ना
धव मुनिस्वर श्रेष्ठहें॥ श्री प्रिय
जहो ध्यान धरि वेठहें॥ नामुन
को मिलन रूपी कामना निमि
क्ष कर पनें जे वेणी नीर्थ रच्यो
हे॥ १२॥ सुवर्ण के वनीय मालि
क्य रत्न खचिन॥ भांनि भांनि के

आभरण मन को रि जावे॥ ए
सेत रोंणा आरक्त कमल के क
रण फूल सो फूल न होइ नो क
हाहे॥ कंदर्प के काम पयें न बाण
खें चोहे॥ १३॥ नित्य नंद कुमा
र को स्वरूप और चरिना मृगत
ओर सुनि॥ होऊ अवण सो क
रि जाको अनुराग प्रगट भयो
हे॥ होऊ पुष्प न होइ॥ १४॥ मुदि
का आदिकों लेके॥ नख सिख
ते लेके॥ बजोटा नारवि विधि

आभरण प्रीयाजूकों पहिराये
 मृगनें नीकेने चविषे सहस्र
 ज्वलरेखा करन भई सो लोच
 न जुगन होइ नो कहा हो कंदर्प
 के हो ऊवाण हो सो विधाने
 देहे रचे हो याते जो भी न जा
 यक सम हो सो बाहर ना ही आ
 वन ॥ १६ ॥ प्रीयाजूकों स्याम अं
 जन ही नो हो नाते जो भक्त के ने
 च विषे ही बाकुर ही है ॥ १७ ॥ चतु
 रस रवीने प्रीयाजूके ने चकोर

स उषा दिन चले नाते चतुरस
 रवीने अंजन की में डवां धी प रि
 सहस्र धारा होइ के प्रगट हो न भ
 यो ॥ अनेक भाव के समूह सो ॥
 चंचल रटे कटाक्ष सो ॥ संधे
 न चले देहे ही चले ॥ रस सो उव
 टिकें फूटि निकसे ॥ १८ ॥ अंजन
 करि रंजित कीये प्रीयाजूके ने न
 ना करि नो खंजना ॥ ओर कंदर्प
 जाते है सखी ॥ एताइ सने नखा
 र के हृदय में रह न है सदा ॥ ना

नें ठाकुर कुंच चलन विभक्ति
रनहो ॥ १८ ॥ अब श्री श्री याजू की
सहचरी कहनहो ॥ जो आगे व
न करिवे कुं साकिहे परिनाहं क
रनिहो ॥ काहेने जो संग मकी क
या को विलंब हो नहो ॥ १९ ॥
अब कहा लो कहियो ॥ भी याजू को
बहुन आभूषण पहिराई ॥ ताऊ
पर फूल की माला पहिरावन म
दी ॥ २० ॥ कंठ विषे रक्षम मही न भी
नर को न रोला ॥ आनक पहिराई

करि ॥ ना पाछे ना बल कस्तूरी क
पूर सहित ॥ अगे गावन भई ॥ २१ ॥
तदनंतर सो रह सिंगार करि द
र्पण समयो ॥ नामें श्री श्री याजू
आपुनो प्रति विवदे रिव प्रसन्न
भए ॥ अनिसौंदर्य देखि के न राखि
न होन भए ॥ देखि के लज्जित होन
भई दृष्टि ॥ ओर थोडो सो मंदहा
स कुंद करन भई ॥ नव प्रीति सरव
कहन भई सो कहनहो ॥ हे राधे क
मलदल पवन सी तुम मधुमय

७
हुन
॥ ५३

नको अनुसरन करो ॥ हे सुसु
खी ठाकुरनें तुमकों प्रणिपति
वी नगीके वचन विषें बहुत हीन
की नोहे ॥ अब तुम्हारे निकुंज वि
षे प्राप्त भए हैं ॥ १ ॥ ठाकुर के से
हें ॥ सारे ब्रज के रतन रूप हैं
यनस्यां मकी आभा ॥ जे सें ह
सकों मिलि करि आपुनो रूप
क सुमफल करि हे ॥ हे सुंदरी रा
धे नंद के सी है ॥ विद्युत् जग जे सी
है ॥ स्वरूप नेयो और यन दा मि

नी मिलि के सो भा पावन है ॥ सो
नृहारा स्वरूप सुफल करो ॥ यह
मंद वायु है ॥ सो तुमकों अनगुण
संमंति है ॥ सो तुमकों ठाकुर के
संग मकों प्रेरन है ॥ और सिद्धाह
करन है ॥ जो अंधारी रात्रि है ॥ अ
भिसार समो है ॥ जानें हरे हरे च
लो ॥ ३ ॥ यह को कि लाह तुमकों बु
लावन है ॥ मधुर अव्यक्त वाणी क
रि करि ॥ कुहु कुहु अभावास्या की
काशी रात्रि है ॥ तुम आवो ॥ हे सखी

ग॥६॥ उज्वल सिंगार पह दि के
चल न हो॥ तुम जो सिंगार पहि
रो सो सब सखी ने जान्यो॥ स
बोंग कवच पहि रि कंदर्प संग्या
म को उद्यम युक्त भए हो॥ जाने
अवल ज्या द्यो डिठा कु र सो अ
भिसार करि आपु नो सर सह
दय करि जाओ॥ ७॥ चरण र
विंद के धूप रु अरु कटि मे रव
ला॥ ए दोऊ के शब्द करि॥ दुंदुभि
व जाय करे॥ हे राधे नंद माधव

हुन॥
५४
यह तुम को उदार नर बुलावन
हो॥ ४॥ नायक नाइ का केहर दय को
विदार एवा लो काम॥ जाने बाण
सांध्यो हो॥ सो लो किक न होइ॥ अ
लोकिक अंधकार हो॥ यह अंधका
र अभिसारिका को काम उद्दीप
कहे॥ ५॥ पहिले अमावास्या की
अंधकार की अभिसार कहि के
अवजो तना अभिसार कह न हो
पुर्णमासी को भी याजू पधारन
हो॥ तव अंजन मिस रह नही कह

कोंटें दे नें न के अंचल करि नें
बान करि ठाकुर को जीति ॥
र के सेहें ॥ सज्ज चिन अ धर ओ
र ऊं चे को द ह करि गो को दे
न हो ॥ तुम के सी हो ॥ लज्जा करि
गो अर्द्ध नी चो देख न ओर मु
स का द ह ह करि कछु कल जा
कछु क म य ॥ कछु क मंद हास
कछु कह र्षी नंद संव लिन भाव
नी द ह क दी ए ना द स हो द हो ॥ स
खी ठाकुर को म भाव च प ल ॥

अच्युत तुल्य रे चुं व न उ दाय
ऊं चे करि ॥ चिबुक न करो ॥ यह
सह चरी ने आशिर्वाद दी नो ॥ अ
ब ठाकुर निकुंज विषे वे दे मा ग
देख न हो ॥ न हां प्री या जू आए ॥
सो प्री प्री या जू की छु द पां टिका
को दां म ॥ ओर को न के सब आ
भर न के ने ज करि निकुंज द्वार
विषे प्रका सहो न भयो ॥ निकुंज
में ठाकुर को देखे ॥ देखे के श्री
प्री या जू ल जा स हि न हें ॥ ॥ हे